IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ज़िला कुल्लू की बराण शिवरात्रि में संगीत की भूमिका

1.श्वेता

पी.एच. डी शोध छात्रा (हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला-5)

2. डॉ. जीतराम शर्मा (विभागाध्यक्ष)

(हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल शिमला- 5

सारांश - हिमाचल प्रदेश मेले व त्योहारों की परम्परा बहुत समृद्ध है। सभी 12 ज़िलों में मनाए जाने वाले मेले व त्योहारों में संगीत का विविध स्वरूप देखते ही बनता है। हमारे देश में प्रमुख देव स्थलों में जनता के धार्मिक सांस्कृतिक मेले व्यापक रूप से आयोजित होते हैं। ये कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि संगीत के अभाव में ये मेले व त्योहार अपूर्ण है। हिमाचल प्रदेश के देव घाटी कुल्लू में देवी देवताओं का विशेष महात्मय है और इन देवताओं से जुड़े देव कार्य व परम्पराएं सदियों से चली आ रही हैं। इन्ही परम्पराओं का निर्वहन करने के लिये विभिन्न देवी देवताओं की उत्पत्ति व रिवाज़ो से सम्बन्धित मेले व त्योहार कई वर्षों से मनाए जा रहे हैं। जिनमें से एक ब्राण की शिवरात्रि है। यहां नीलकंठ महादेव का एक बहुत प्राचीन मंदिर है, जिसमें हर वर्ष महाशिवरात्रि की रात को भव्य पर्व के रूप में मनाया जाता है। और एक विशेष प्रकार के गीत की पंक्तियां "शिवरात" का गायन होता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इन्हीं पंक्तियों का गायन पूर्व समय में देव भार्था (एक विशेष व्यक्ति के मुख से देव वाणी) के रूप में किया जाता था, जो आज एक पुजारी के द्वारा किया जाता है। इस प्रकार बराण की महाशिवरात्रि के पर्व की समृद्ध परम्परा को बनाए रखने में शिवरात गायन विशेष स्थान रखता है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र में बराण शिवरात्रि त्योहार के सांस्कृतिक व सांगीतिक महत्व का उल्लेख किया गया है।

मुख्य बिन्दु : मेले एवं त्योहार,.जिला कुल्लू ,लोक संस्कृति, लोक संगीत, बराण शिवरात्रि

भूमिका - किसी भी देश प्रदेश का संगीत उसके लोक जीवन की सभ्यता व संस्कृति का दर्पण है। सामाजिक जीवन का हर अनुष्ठान व लोकोत्सव लोक संगीत के बिना अधूरा है। सर्वाधिक सांस्कृतिक परम्पराएं लोकसंगीत के माध्यम से ही जीवित रहती हैं। मेले व त्योहार सामाजिक व सांस्कृतिक एकता का प्रतीक हैं जो लोकसंगीत को जीवित रखने का कार्य कर रहे है। मेले व त्योहार स्थानिय परम्परा का निर्वह करते हुए समग्र भारतीय संस्कृति के अंग बनते है। साथ ही इन मेलों की असली शोभा संगीत से ही है। हिमाचल प्रदेश के सभी 12 ज़िलों में मनाए जाने वाले मेले व त्योहारों में संगीत का विविध स्वरूप देखते ही बनता है व विशेष महत्व रखता है। संगीत व देव संस्कृति के अभाव में ये मेले व त्योहार अपूर्ण है। ज़िला कुल्लू जिसे देवभूमि कुल्लू के नाम से भी जाना जाता हैए यहां विभिन्न देवी देवताओं से जुड़े मेले व त्योहारों की समृद्ध परम्परा है जो गांव गांव में लोक संगीत की प्राचीन परम्परा को आज तक समेटे हुए हैं। जिनमें से एक ब्राण की शिवरात्रि है। कुल्लू जनपद के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपराएं लोगों की प्रकृति प्रेम का प्रतीक है। परस्पर सामंजस्य बिठाना इन्होंने प्रकृति से सीखा है।

बराण गांव के नीलकण्ठ महादेव मन्दिर .

हिमालय के आंचल में स्थित कुल्लू जनपद अपने प्राकृतिक सौन्दर्य तथा समृद्ध सांस्कृतिक सरोकारों को लिये विख्यात रहा है। कुल्लू ज़िला के व्यास नदी के दाएं तट पर स्थित बराण से लगभग आधा कि. मी. की दूरी पर डोभा गांव में नीलकण्ठ महादेव का प्राचीन मन्दिर है जिसमें प्राचीन शिवलिंग स्थापित है। "बराण भगवान शिव का एक गांव है। गांव से 500 मीटर दूर भगवान शिव का मंदिर है। गांव में करीब 80 परिवार रहते हैं। गांव के पीछे एक चट्टानी पहाड़ है और दूसरी तरफ घने, देवदार, ओक और चीड़ के जंगल भी हैं। इस चट्टानी पहाड़ और घने जंगल के बीच एक धारा है। यह बहुत खूबसूरत गांव है। यहाँ एक सुंदर जलप्रपात भी है। यह NH3 से 700 मीटर दूर है।"[1] काठकूणी शैली में बना डेढ़ मंज़िल का मंदिर ब्राण से लगभग आधा कि. मी. की दूरी पर गांव डोभा में स्थित है। मंदिर में प्राचीन शिवलिंग स्थापित है। मान्यता है कि देवता की सौह में छद्मेश धारण किए भीम का नीलकण्ठ महादेव से युद्ध हुआ थाए जिसमें भीम हार गया था। अतः इसे भीम सौह के नाम से ाना जाता है। और मंदिर का इतिहास बहुत पुराना है। और नीलकंठ महादेव के चमत्कारों की प्राचीन काल से ही मान्यजा है।

बराण में मेले व त्यौहार – "चैत्र मास की संक्रांति को जेठा विरशु तथा नवसंवतसर वैसाख मास मे कौन्हा विरशु तथा ज्येष्ठ मास की संक्रांति को नीलकण्ठ महादेव के प्रकट होने के उत्सव के रूप में कापू मेला मनाया जाता है। तीन दिन तक चलने वाले इस मेले में अन्य देवी देवता भी भाग लेते हैं। देव मिलन व देउखेल मेले का मुख्य आकर्षण होते हैं। भादो मास में शाउणी जाच।"[2] इसी के साथ यहाँ हर वर्ष फागुन मास में फागली व महाशिचरात्रि का पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। शिवरात्रि में देव पूजन व देव प्रक्रिया के साथ जिसमें उपवासए जगराताए पूजा व आरती होती है। इस प्रकार मेले व त्यौहारों की परम्परा यहां सेदयों से चली आ रही हैए जो आज तक देव संस्कृति के रूप में लोक संस्कृति को बनाए हुए है।

लोक उत्सवों में संगीत - ब्राण गांव में वर्ष भर कोई न कोई उत्सव का आयोजन किया जाता है जिनमें देव खेल व देव मिलन विशेष आकर्षण का केंद्र बनते हैं जिनमें की संगीत के अभाव में कोई भी प्रक्रिया संभव नहीं है। इन मेलों में देव मिलन के समय ढोल पर व शहनाई पर लोक तालों का वादन किया जाता है जिसके दिव्य प्रभाव से देवता व्यक्ति में प्रवेश करके देववाणी में सब से संवाद करते हैं ऐसी मान्यता है और देवताओं के वाहन या पालकी जिसे लोग कन्धों पर उठा कर ले चलते हैं जिसे देव रथ कहा जाता है ये भी उसी शक्ति से एक दूसरे की ओर झुकते हैं परिक्रमा व नृत्य करते हैं। इसी के साथ फागुन की फागली में मुखौटा नृत्य प्रमुख है और शिवरात्रि का त्योहार यहां प्राचीन संगीत व संस्कृति को कई वर्षों से संरक्षित कर रहा है।

"शिवरात्रि की पूजा के समय शंख और झांझ का प्रयोग होता है। मेले त्योहारों आदि विशेष अवसरों पर जब देवरथ सजा होता है तो उसकी सुबह शाम अलग से तब तक पूजा होती हैए जब तक रथ की साज.सज्जा उतारकर उसे भंडार में ना रख दिया जाए। रथ की पूजा में धड़छ में बेठर (जड़ी धूप) जलाकर घोंडी वाद्य यंत्र ढोल, नगाड़ा, भाणा आदि तथा चंदन पुष्प जल अक्षत, मोर मुंट्ठा और चबर के साथ होती है।"[3]

"आरती के समय सायं काल में पुजारी द्वारा निम्नलिखित पंक्तियाँ गाई जाती हैं व पीछे से सभी भक्त गाते हैं। इन पंक्तियों को शिवरात कहा जाता हैए ऐसी मान्यता है कि प्राचीन समय में यह शिवरात देव भार्ता के रूप में किसी पुरूष द्वारा गाई जाती थी अतः इसे दैविय शक्ति का प्रमाण कहा जाता है। फिर समय के साथ साथ यह शिवरात पुजारी द्वारा कही जाने लगी और कई पीढ़ियों से शिवरात्रि के दिन गाई जाती आ रही हैं-

।। जय नीलकण्ठ महादेव ।।

शिवरात

द्वीप जोगी आठए मुन्दरा तल्हान्दै ।।

द्वीप जोगी आठए रईए रडान्दै।।

द्वीप जोगी आठए हिंठं सिठं लान्दै।।

द्वीप जोगी आठए पाऊआ तेरा ।।

दै जोगिए दाहिणा घेरा।।

द्वीप जोगी आठए बड़ै बड़ै धान्दै।

द्वीप जोगी आठए बौड़ै भड़ोलु।।

द्वीप जोगी आउए लैटा तल्हान्दै।।

तीना लैटा रा छिकू बणान्दै।

तेई छिकु बै हाटी पझान्दै ।।

तेसा हाटी न ढेैबुआ बणान्दै।।

तेई ढबुऐ रा तेल मंगान्दै ।।

तेई तेला रा तेरी रातीन दीपक जलान्दै।"

यह एक अनिबद्ध गीत शैली है। यह गीत जंगम जोगियों पर आधारित है । "शैव संप्रदाय के यह जो भी भगवान शिव की भक्ति के लिए जाने जाते हैं जो भगवान शिव की कहानी सुनाते हैं जिसमें शिव की विवाह से लेकर उनके अमरनाथ जाने तक की पूरी कहानी को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।"[4] यह जोगी जिस प्रकार घंटी हिलाते हुए, बाल हिलाते हुए, मेहमान के रूप में आते हैं और शिवरात्रि पर तेल का दीपक जलाते हैं, इस प्रकार की बातें कही गई हैं । शिवरात्रि के दिनों में यह लोग विशेष रूप से इधर से उधर शिव जी की कथाएं गाते हुए घूमते हैं।

गीत के स्वर इस प्रकार हैं-

स्वरलिपि-. रे ग सा सा ध़। सा रेग ग. रे। रे ग सा रे प म

दी प जो गी ऽ। आ ऽऽ उए ऽ। मुं द रा त लां दे

रे ग सा सा ध़। सा रेग ग. रे। रे ग. सा ग रे सा सा

दी प जो गी ऽ। आ ऽऽ उए ऽ। मुं द रा त लां दे

आगे की पंक्तियां भी इसी प्रकार हैं।

"शणोर्नियो

आयो शणोर्नियो रीतो

माँऊ जै भड़ोकदियो सीतो

बोड़ा सी कांदड़ी चुकदीओ छडोलियो।

जैई धारा जै बाजीओ काईओ ।।

नोंए जे देदिए ओ लाए।

पाथरु भोरुओ ओ शबाए।।

नीरमण्डा लागी ए ओ घराटीओ।

घीठ सोतू जै बैशिओ जीमयो जामयो

शाली माली वोलदा ओ।

निर्मण्डा जै बाजियो काईयो।

नोटे नोटे हिउंदा हिउंदा।

आए औ जै वासता ओ काडे।

सैरी ढीले जौ ओ गेहुंओ।

चीड़ी लागी जै भाषदिओ डाडे।।

जिन दिए जै झोंपरियों निरगिणिए।

जै मुँए ते नेईयो फिरे।।

निली जै चिड़िए ओ बरुडिए।

तू भाषे जै राजे रायती रे जैशो।।

निली जै चिड़िए ओ बरुडिए।

तू भाषे महादेउ रे जैशो।। "[5]

शणोर्निंयो मूल रूप से श्णोर नामक स्थान जो कुल्लू में ही है पर गाया जाने काला गीत है इन पंक्तियों का आशय है कि शिवरात्रि आ गई है तो सीता नाम की युवती सभी औरतों को कि सभी महादेव के उत्सव में सब काम छोड़कर लीन हो जाओ। इस रचना को आलाप जिसे स्थानिय भाषा में लामण कहा जाता है उस शैली में गाया जाता है। जो कि एक अनिबद्ध रचना है। अतः ये लामण शास्त्रीय संगीत के आलप्ति गान के समान कहा जाता है जो प्राचीन समय से देवताओं के लिए गाया जाता था। ये आज तक गाया जाता है जिसका कारण शिवरात्रि का ये त्योहार है।

ये दोनो रचनाएं टांकरी लिपि में निबद्ध हैं। जो कुल्लू की स्थानिय बोली है। अतः सभी मेले व त्योहार संगीत के द्वारा ही पूर्ण हो पाते हैं।

उपसंहार - हिमाचल प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों में जो आज सांस्कृतिक विरासत देखने को मिलती है उसमें देव परंपरा की प्रधानता है। मेले व त्योहारों के गीत सम्पूर्ण हिमाचल में लोक संस्कृति को दर्शाने का बेहतरीन माध्यम हैए पारम्परिक संगीत को जीवित रखने का कार्य इन्होने ही किया है। और लोक संगीत ने मेलों का स्वरूप आज तक बरकरार रखा है। साल के 12 महीने ये मेले सांगीतिक वातावरण बनाए रखते हैं। अतः इनका संरक्षण व युवा पीढ़ी तक इनका पहुंचना अति आवश्यक है। इस प्रकार संगीत लोक जीवन का अभिन्न अंग है। पूरे कुल्लू में देव संस्कृति का अपना ही महत्व है। इसी कड़ी में ये छोटे.छोटे गांव के त्योहार व देेव उत्सव परम्परा के संरक्षण में निरन्तर हिस्सा बन रहे हैं। जिससे यहां का संगीत आज तक जीवित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

[1] India, O. (n.d.). *overview of bran*. Retrieved from onefivenine explore india: http://www.onefivenine.com/india/villages/Kullu/Naggar/Bran

[2] कुल्लू देव परंपरा, सचिव हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला हिमाचल प्रदेश, प्रथम संस्करण 2012,पृ. 163

[3] साक्षातकार, वात्स्यायन अश्वनि, 28 फरवरी 2021

[4] Ekata Samantarya. (दि.न.). *जंगम जोगी*. भक्ति भारत: https://www.google.com/amp/s/www.bhaktibharat.com/amp/blogs/jangam-yogi से पुनर्प्राप्त

[5] साक्षातकार, वात्स्यायन अश्वनि, 28 फरवरी 2021